सूर्य देव की पूजा या आराधना हिंदू धर्म में एक महत्वपूर्ण परंपरा है। सूर्य को प्रत्यक्ष देवता माना जाता है और उनकी उपासना से आध्यात्मिक विकास, उत्तम स्वास्थ्य, सफलता और स्पष्ट सोच प्राप्त होती है। सूर्य की उपासना करके इंसान अपने जीवन को सर्वोत्तम बना सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान पाने के लिए सूर्य उपासना सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। सूर्य उपासना प्रतिदिन और विशेष रूप से रविवार के दिन नियमित रूप से की जाती रही है। इसके अलावा मुख्य पर्वों में कार्तिक शुक्ल षष्ठी को छठ पूजा, भाद्रपद शुक्ल पक्ष का अंतिम रविवार को बड़ा रविवार और माघ शुक्ल सप्तमी को रथ सप्तमी प्रमुख रूप से शामिल है।

डॉ. राधेश्याम द्विवेदी
आचार्य

भारत में सूर्य उपासना के प्रमुख केंद्र

प्रमुख सूर्य मंदिर

भारत में मुख्यतः बीस सूर्य मंदिर का उल्लेख मिलता है। ये मंदिर भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का हिस्सा हैं और सूर्य देव की पूजा के लिए महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

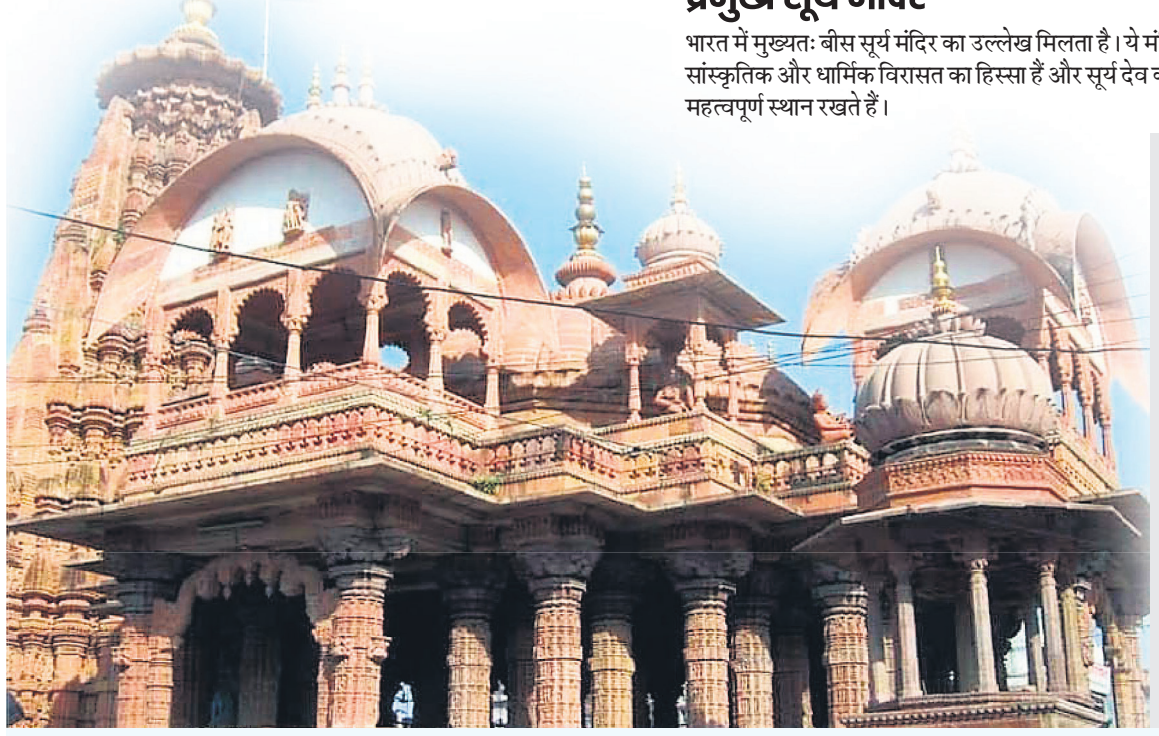

सूर्य मंदिर झालावाड़

झालावाड़ का सूर्य मंदिर, जिसे झालरापाटन का सूर्य मंदिर भी कहा जाता है। राजस्थान के झालावाड़ जिले के झालरापाटन शहर में स्थित है। यह मंदिर अपनी अनूठी वास्तुकला और धार्मिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है।

सूर्य मंदिर , नीरथ- हिमाचल प्रदेश

यह एक प्राचीन और अनोखा सूर्य मंदिर है, जो उत्तर भारत में स्थित है। यह मंदिर सतलुज नदी के बाएं तट पर स्थित है और रामपुर से 18 किलोमीटर दूर है। यह मंदिर नागर शैली में बनाया गया है और भगवान सूर्य देव (सूर्य) और उनकी पत्नी छाया को समर्पित है।

- **सूर्य मंदिर, हंडिया-** हंडिया में सूर्य मंदिर, जिसे सूर्य नारायण धाम मंदिर भी कहा जाता है। बिहार के नवादा जिले के नारदीगंज प्रखंड में स्थित है। यह मंदिर द्वापर युग से जुड़ा हुआ है और माना जाता है कि इसका निर्माण भगवान कृष्ण के पुत्र साम्ब ने करवाया था। यह मंदिर कुष्ठ रोग से मुक्ति के लिए प्रसिद्ध है और माना जाता है कि मंदिर के पास स्थित तालाब के पानी में स्नान करने से कुष्ठ रोग ठीक हो जाता है।
- **सूर्य मंदिर, गया-** गया में सूर्य मंदिर, देव सूर्य मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है, जो बिहार के औरंगाबाद जिले में स्थित है। यह मंदिर भगवान सूर्य को समर्पित है और छठ पूजा के दौरान विशेष रूप से प्रसिद्ध है।
- **सूर्य मंदिर, महोबा-** उत्तर प्रदेश के महोबा में सूर्य मंदिर राहिला सागर के पश्चिम दिशा में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण चंदेल शासक राहिल देव वर्मन ने एक तालाब को खुदवाकर, जिसे राहिल सागर के नाम से जाना जाता है। 890 से 910 ई. के दौरान नौवीं शताब्दी में करवाया था। इस मंदिर की वास्तुकला काफी खूबसूरत है। 1203 में कुतुबुद्दीन ऐबक ने इस मंदिर को भारी नुकसान पहुंचाया।
- **रहली का सूर्य मंदिर, सागर-मध्य प्रदेश-** रहली का सूर्य मंदिर, मध्य प्रदेश के सागर जिले में स्थित एक प्राचीन मंदिर है। यह मंदिर सुनार नदी के तट पर स्थित है और कर्क रेखा पर स्थित देश का एकमात्र सूर्य मंदिर होने का गौरव रखता है। नौवीं सदी में चंदेल राजाओं द्वारा निर्मित, यह मंदिर ऐतिहासिक व धार्मिक महत्व रखता है।
- **सूर्य मंदिर, रांची-** यह झारखंड की राजधानी रांची से लगभग 40 किमी (25 मील) दूर एनएच-43 (रांची-टाटा रोड) पर एक पहाड़ी की चोटी पर स्थित है। मंदिर का निर्माण एक विशाल रथ के रूप में किया गया है, जिसमें सुंदर ढंग से डिजाइन किए गए अठारह पहिए और सात प्राकृतिक घोड़े हैं। मंदिर में शिव, पार्वती और गणेश सहित कई अन्य देवता भी हैं।
- **सूर्य मंदिर, कंदाहा-** कंदाहा गांव में स्थित सूर्य मंदिर, सहरसा जिले के महिषी प्रखंड की पस्तवार पंचायत में है। यह एक महत्वपूर्ण धार्मिक और ऐतिहासिक स्थल है, जो सहरसा जिला मुख्यालय से लगभग 16 किलोमीटर दूर है। इस मंदिर में सात घोड़ों के रथ पर सवार सूर्य भगवान की मूर्ति एक ग्रेनाइट स्लैब पर बनी हुई है।

- **उलार्क सूर्य मंदिर-** उलार्क सूर्य मंदिर, बिहार के पटना जिले में दुल्हिनबाजार प्रखंड के पास स्थित एक प्रसिद्ध सूर्य मंदिर है। यह देश के 12 प्रसिद्ध सूर्य मंदिरों में से एक माना जाता है। इसे भगवान भास्कर का तीसरा सबसे बड़ा सूर्य आर्क स्थल माना जाता है।
- **कोणार्क सूर्य मंदिर-** कोणार्क सूर्य मंदिर ओडिशा के पुरी जिले में समुद्र तट पर पुरी शहर से लगभग 35 किलोमीटर (22 मील) उत्तर-पूर्व दिशा में स्थित है। यह मंदिर 13 वीं शताब्दी में राजा नरसिंहदेव द्वारा बनवाया गया था और यह भारत की मध्ययुगीन वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
- **मोदेरा सूर्य मंदिर-** मोढेरा का सूर्य मंदिर, गुजरात के मेहसाणा जिले में स्थित एक प्राचीन मंदिर है, जो अपनी अनूठी वास्तुकला और जटिल नक्काशी के लिए प्रसिद्ध है। यह मंदिर 11 वीं शताब्दी में सोलंकी वंश के राजा भीम प्रथम के शासनकाल में बनाया गया था।

- कटारमल सूर्य मंदिर (उत्तराखंड)- यह मंदिर 9 वीं शताब्दी में बनाया गया था और यह उत्तराखंड के सबसे महत्वपूर्ण सूर्य मंदिरों में से एक है, जो उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले में स्थित एक प्राचीन सूर्य मंदिर है। यह मंदिर कुमाऊं क्षेत्र का एकमात्र सूर्य मंदिर होने का गौरव रखता है। इसे 'बड़ादित्य सूर्य मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर 2,116 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और कोणार्क के सूर्य मंदिर से भी पुराना माना जाता है।
- रणकपुर सूर्य मंदिर (राजस्थान) - यह मंदिर 15 वीं शताब्दी में बनाया गया था और यह अपनी जटिल नक्काशी और 1444 खंभों के लिए प्रसिद्ध है।
- सूर्य पहर मंदिर (असम)- यह मंदिर असम के गोलपारा जिले में स्थित है।
- सूर्य मंदिर, प्रतापगढ़ (उत्तर प्रदेश)- यह मंदिर उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जिले में स्थित है।
- दक्षिणार्क सूर्य मंदिर (बिहार)- यह मंदिर बिहार के गया जिले में स्थित है।

- देव सूर्य मंदिर (बिहार)- यह मंदिर बिहार के औरंगाबाद जिले में स्थित है।
- मार्तंड सूर्य मंदिर (कश्मीर)- यह मंदिर 8 वीं शताब्दी में राजा ललितादित्य मुक्तापीड द्वारा बनवाया गया था और यह कश्मीर के सबसे पुराने सूर्य मंदिरों में से एक है।
- औंगारी सूर्य मंदिर (बिहार)- यह मंदिर बिहार के नालंदा जिले में स्थित है।
- बेलार्कसूर्य मंदिर- बेलाउर सूर्य मंदिर बिहार के भोजपुर जिले के बेलाउर गांव के पश्चिमी एवं दक्षिणी छोर पर अवस्थित एक प्राचीन सूर्य मंदिर है। इसका निर्माण राजा सूबा ने करवाया था। बाद में बेलाउर गांव में कुल 52 पोखरा (तालाब) का निर्माण कराने वाले राजा सूबा को 'राजा बावन सूब' के नाम से पुकारा जाने लगा। राजा द्वारा बनवाए 52 पोखरों में एक पोखर के मध्य में यह सूर्य मंदिर स्थित है।

बोध कथा

बुराई में अच्छाई

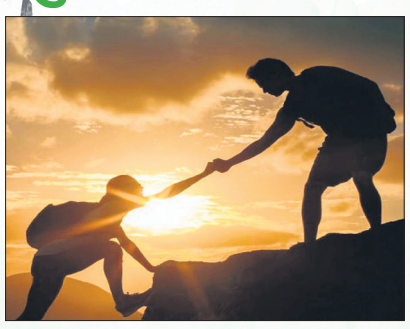

एक शिष्य अपने गुरु से सप्ताह भर की छुट्टी लेकर अपने गांव जा रहा था। वह गांव के लिए पैदल ही निकला। जाते समय रास्ते में उसे एक कुआं दिखाई दिया। शिष्य प्यासा था, इसलिए उसने कुएं से पानी निकाला और अपना गला तर किया। कुएं का जल बेहद मीठा और ठंडा था, शिष्य को अद्भुत तृप्ति मिली। शिष्य ने सोचा कि क्यों न यहां का जल गुरुजी के लिए भी ले चलूं। उसने अपना मटका भरा और वापस आश्रम की ओर चल पड़ा। वह आश्रम पहुंचा और गुरुजी को सारी बात बताई। गुरुजी ने शिष्य से पानी लेकर पिया और संतुष्टि महसूस की। उन्होंने शिष्य से कहा, "वाकई जल तो गंगाजल के समान है"। शिष्य को खुशी हुई। गुरुजी से इस तरह की प्रशंसा सुनकर शिष्य आज्ञा लेकर पुनः अपने गांव की ओर चल पड़ा। कुछ ही देर में आश्रम में रहने वाला एक दूसरा शिष्य गुरुजी के पास पहुंचा और उसने भी वह जल पीने की इच्छा जताई। गुरुजी ने मटका शिष्य को दे दिया। शिष्य ने जैसे ही घूंट भरा, उसने पानी बाहर कुल्ला कर दिया। शिष्य बोला- "गुरुजी इस पानी में तो कड़वापन है और न ही यह जल शीतल है। आपने बेकार ही उस शिष्य की इतनी प्रशंसा की"। गुरुजी बोले- "बेटा, मिठास और शीतलता इस जल में नहीं है, तो क्या हुआ। इसे लाने वाले के मन में तो है। जब उस शिष्य ने जल पिया होगा तो उसके मन में मेरे लिए प्रेम उमड़ा। यही बात महत्वपूर्ण है। मुझे भी जल तुम्हारी तरह ठीक नहीं लगा। मैं यह कहकर उसका मन दुखी करना नहीं चाहता था। हो सकता है, जब जल मटके में भरा गया, तब वह शीतल हो और मटके के साफ न होने के कारण यहां तक आते-आते यह जल वैसा नहीं रहा, लेकिन इससे लाने वाले के मन का प्रेम तो कम नहीं होता है न"। **- फीचर डेस्क**

पौराणिक कथा

संत का आशीर्वाद

महर्षि नारद वैकुंठ की यात्रा पर जा रहे थे, नारद जी को रास्ते में एक औरत मिली और बोली, "मुनिवर आप प्रायः भगवान नारायण से मिलने जाते हैं। मेरे घर कोई संतान नहीं है आप श्री प्रभु से पूछना मेरे घर संतान कब होगी"? नारद जी ने कहा, "ठीक है, पूछ लूंगा"। इतना कहकर नारदजी नारायण-नारायण कहते हुए यात्रा पर चल पड़े। वैकुंठ पहुंचकर श्री नारायण जी ने नारदजी से जब कुशलता पूछी तो नारदजी बोले "जब मैं आ रहा था तो रास्ते में एक औरत, जिसके घर कोई संतान नहीं है। उसने मुझे आपसे पूछने को कहा कि उसके घर पर संतान कब होगी"। नारायण बोले, "तुम उस औरत को जाकर बोल देना कि उसकी किस्मत में संतान का सुख नहीं है"।

डॉ.विपिन शर्मा
ज्योतिषाचार्य

नारदजी जब वापस लौट रहे थे, तो वह औरत बड़ी बेसब्री से नारदजी का इंतजार कर रही थी। औरत ने नारदजी से पूछा कि प्रभु नारायण ने क्या जवाब दिया! इस पर नारदजी ने कहा प्रभु ने कहा है कि आपके घर कोई औलाद नहीं होगी। यह सुनकर औरत दहाड़े मारकर रोने लगी नारदजी चलते बने। कुछ समय बीत गया। गांव में एक संत मधुकरी के लिए आए और उस संत ने उसी औरत के घर के पास ही आवाज लगाई। संत की आवाज सुनकर वो औरत मधुकरी के लिए भोजन ले आई। दान पाकर संत ने उसे पुत्रवती होने का आशीर्वाद दिया और जैसा उस संत ने कहा था वैसा ही हुआ। उस औरत के घर एक बेटा पैदा हुआ। उस औरत ने बेटे की खुशी में गरीबों में खाना बांटा और ढोल बजवाए। कुछ वर्षों बाद जब नारदजी पुनः वहां से गुजरे तो वह औरत नारद जी को उलाहना देते हुए कहने लगी, "क्यों नारदजी आप तो हर समय नारायण-नारायण करते रहते हैं, आपने तो कहा था, मेरे घर संतान नहीं होगी। यह देखो मेरा राजकुमार बेटा", फिर उस औरत ने उस संत के बारे में भी बताया। अब नारदजी को इस बात का जवाब चाहिए था कि यह कैसे हो गया। वह जल्दी-जल्दी नारायण धाम की ओर गए और प्रभु से ये बात कही कि आपने कहा था कि उस औरत के घर संतान नहीं होगी। क्या उस संत में आपसे भी ज्यादा शक्ति है?

नारायण भगवान बोले आज मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं है। मैं आपकी बात का जवाब बाद में दूंगा। पहले आप मेरे लिए औषधि का इंतजाम कीजिए। नारदजी बोले आज्ञा दीजिए प्रभु, श्री नारायण बोले नारदजी आप भूलोक जाइए और एक कटोरी रक्त लेकर आइए। नारदजी कभी इधर कभी उधर घूमते रहे, पर प्याले भर रक्त नहीं मिला। उल्टा लोग उपहास करते कि नारायण बीमार हैं। चलते-चलते नारदजी किसी जंगल में पहुंचे। वहां पर वही संत मिले, जिसने उस औरत को बेटे का आशीर्वाद दिया था। वो संत नारदजी को पहचानते थे, उन्होंने कहा, "अरे नारदजी आप इस जंगल में इस समय क्या कर रहे हैं"। इस पर नारदजी ने जवाब दिया। "मुझे प्रभु ने किसी इंसान का रक्त लाने को कहा है"। यह सुनकर संत खड़े हो गए और बोले कि प्रभु ने किसी इंसान का रक्त मांगा है। संत ने कहा, "आपके पास कोई छुरी या चाकू है"? नारदजी ने कहा कि "वह तो मैं हाथ में लेकर घूम रहा हूं"। उस संत ने अपने शरीर से एक प्याला रक्त दे दिया। नारदजी वह रक्त लेकर नारायण जी के पास पहुंचे और कहा आपके लिए मैं औषधि ले आया हूं। नारायण ने कहा यही आपके सवाल का जवाब भी है, जिस संत ने मेरे लिए एक प्याला रक्त मांगने पर अपने शरीर से इतना रक्त भेजकर मुझे अपना ऋणी बना लिया है, जो मुझसे इतना प्रेम करता हो, क्या उस संत के आशीर्वाद देने पर मैं किसी को बेटा भी नहीं दे सकता? उस बांझ औरत के लिए प्रार्थना आप भी तो कर सकते थे, पर आपने ऐसा नहीं किया। रक्त तो आपके शरीर में भी था, पर आपने नहीं दिया।

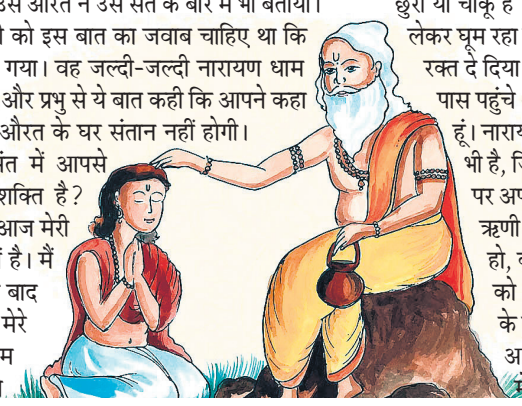

सप्ताह के प्रमुख व्रत

गंगा स्नान- 5 नवंबर

महत्व : कार्तिक पूर्णिमा का दिन हिंदू धर्म में बहुत खास माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन देवी-देवता स्वर्ग से धरती पर गंगा स्नान करने आते हैं। इसलिए इस दिन गंगा स्नान का बहुत महत्व है। साथ ही भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी के साथ भगवान शिव व माता पार्वती की पूजा करने का विधान है।

देव दीपावली - 5 नवंबर

पौराणिक कथाओं के अनुसार, इसी दिन भगवान शिव ने त्रिपुरासुर नामक शक्तिशाली राक्षस का वध किया था। इस खुशी में सभी देवताओं ने काशी में दीप जलाकर उत्सव मनाया था। इसलिए इस दिन भगवान शिव की पूजा करने और उनके मंत्रों का जाप करने से हर इच्छा पूरी होती है।

करुणा : मानवता और सहजीवन की आधारशिला

करुणा मानवीय हृदय का सुकोमल भाव है। यह मानवता का सर्जक और सहजीवन का मुख्य कारक भाव है। करुणा का भाव व्यक्ति को पीड़ित प्राणी के अंतः करण से जोड़ देता है। करुणा मानव हृदय की अनमोल संपदा है। सर्वोच्च विचार धारा और आत्मा का अमृत है। यह जब मानव हृदय से समाप्त हो जाता है, तो मानव मन मात्र पत्थर के रूप में परिणत हो जाता है। किसी पीड़ित प्राणी को देखकर अपने हृदय में एक हलचल खड़ी होना, एक स्पंदन खड़ा होना, मन को कंपन आना यह करुणा का जागरण है। करुणा प्रेरित व्यक्ति पीड़ित व्यक्ति को कष्ट मुक्त कर के अत्मिक आनंद का अनुभव करता है। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के जीवन की घटना इस तथ्य को अधिक स्पष्ट कर देगी। एक बार वे मित्रों के साथ कहीं जा रहे थे, उन्होंने गटर के नाले में एक सूअर के बच्चे को करुण रुदन करते सुना। वे तत्काल उस गटर में उतर गए और सूअर के बच्चे को बाहर ले आए। कपड़े सब खराब हो गए थे। मित्रों ने कहा आपने यह क्या कर दिया, सारे कपड़े गंदे कर दिए। लिंकन ने कहा ये तो अभी धुल जाएंगे यदि मैं इस सूअर के बच्चे को तड़पता छोड़कर चला जाता तो रात भर मैं चैन से सो भी नहीं पाता। इसे बचाकर मैंने अपना चैन ही बचाया है। अब मैं आराम से नींद ले सकूंगा। उक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि करुणा प्रेरित व्यक्ति, जो सेवा करता है वह किसी पर उपकार करने के लिए नहीं, किंतु अपने आत्मिक आनंद के लिए वह ऐसा करता है। पांडु पत्नी राज माता कुंती देवी ने तो एक ब्राह्मण के बच्चे को बचाने को अपने पुत्र को मृत्यु के साक्षात अवतार बक राक्षस से भिड़ने को भेज दिया, मेघरथ और शिवि जैसे आदर्श हमारे इतिहास के अनमोल आदर्श हैं। अपने तन का बलिदान देकर भी एक कबूतर को बचा लेना, उनका परम धर्म बन गया था।

कांतिलाल मांडोत
लेखक

करुणा सहजीवन की प्रबल आधार शिला है। परिवार और समाज तभी आदर्श और श्रेष्ठ सिद्ध होता है, जब उनमें प्रत्येक व्यक्ति परस्पर करुणा भाव से अनुप्राणित होते हैं। सेवा का उच्चतम आदर्श करुणा से ही चरितार्थ होता है। आज जन-जीवन की मानसिकता में करुणा का स्रोत सूखता चला जा रहा है। फलत मानव राक्षस जैसी प्रवृतियां करने लगा है। हत्याएं लूटपाट अत्याचार देश में बढ़ रहे है। सभी चिंतित है, किंतु उसका उपाय करुणा भाव है। देश में इस भाव से जागरण का प्रयत्न करना चाहिए। हम अपनी आस्थाएं खोकर, सब कुछ खो देंगे। हम पारंपरिक रूप से अनेक श्रद्धा और आस्थाओं से जुड़े हुए हैं। हमारी संस्कृति और हमारे धर्म बहुआयामी हैं। सभी धर्मों की श्रेष्ठ प्रवृतियों और सिद्धांतों के प्रति हम आस्थावान रहते आए हैं। एक दूसरे के प्रति सम्मान भाव से संयुक्त रहना हमारी मानसिक प्रतिबद्धता है। उदारता हमारे विचारों का प्रमुख तत्व है। स्यादवाद अर्थात् अनेकांतवाद हमारी समस्त प्रवृतियों का आस्थाओं का अंतर्निहित तत्व है, हम इसे कभी खो नहीं सकते। इस को खो देने का अर्थ होगा अपना अस्तित्व ही समाप्त कर देना।

कुछ संस्कृतियां जो भारत की मिट्टी में नहीं उपजी है, नितांत असहिष्णु और भोगवादी हैं। वे मानव को पाशविक स्तर तक भोगवादी बनाने को प्रस्तुत है। किन्हीं विशिष्ट तत्वों के प्रति आस्था का वहां कोई निश्चित आधार नहीं है। वे संस्कृतियां भारत की महान तप संस्कृति को क्षति पहुंचाने का कार्य कर रही हैं। ऐसी स्थिति में देश के प्रबुद्ध वर्ग को गहनता के साथ यह सोचना होगा कि हम इस महान संस्कृति के क्षरण को कैसे रोक पाए? आस्था और विश्वास का संबल वह शक्ति है, जो राष्ट्र और संस्कृति की मौलिकता को बचा सकती है, हमें दृढ़ता के साथ इस दिशा में प्रयत्न करना चाहिए। हमारे धर्म हमारी संस्कृति के प्राण हैं, धार्मिक अनुष्ठान साधनाएं हमारे श्रेष्ठ संस्कार और प्रेरणा हैं। इन्हें अक्षुण्ण रखकर ही हम अपनी संस्कृति को बचा सकते हैं। भारत के सभी धर्म संप्रदायों को पारस्परिक सम्मान और सहयोग के साथ जुड़कर रहना चाहिए। कोई धर्म संप्रदाय का शत्रु नहीं है।

सभी धर्म संप्रदायों का शत्रु अधर्म है। सभी को मिलकर अधर्म के विरुद्ध लड़ना चाहिए। तनिक सोचिए कि धार्मिक आस्था ही नहीं रहेगी, तो कोई धर्म संप्रदाय कैसे बचेगा? सभी धर्म संप्रदाएं आस्था के आंगन में ही फलते फूलते हैं। अतः जनता की आस्था अनास्था में न बदले इसके लिए सभी को प्रयास करना चाहिए। नास्तिकता ही धर्म विरोधी शक्ति है, उसे ही निरस्त करने का प्रयास होना चाहिए। धर्म संप्रदाएं परस्पर एक दूसरे को निरस्त करने का प्रयास क्यों करें? पारस्परिक संघर्षों से नास्तिकता के लिए भूमिका तैयार होती है।